॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

प्रभु! आपसे सुन्दर कौन हो सकता है? आपसे उत्तम वैज्ञानिक कौन हो सकता है जिसने इस जगत् को रचाया, जिसने इतने बड़े ब्रह्माण्ड का सर्वत्र जीवन मानव शरीर को बना दिया। पिण्ड को ब्रह्माण्ड बना दिया। कैसी सुन्दर विवेचना है, कैसी सुन्दर रचना है आपकी। मैं तो इसको किसी काल में भी नहीं जान पाता। मैं तो यही नहीं जान पाता कि प्रभु! मेरे एक क्षण समय में कितनी तरंगें उत्पन्न होती हैं, श्रोत्रों में कितने शब्दों की उद्बाधता होती है, भगवन् मैं तो सँसार में कुछ नहीं जानता। मुझे तो भगवन्! एक ऐसा मार्ग दीजिए जिससे इस सँसार में मेरे द्वारा विडम्बना न आ पाये क्योंकि सँसार में नाना प्रकार की सुन्दरियों पर जब मेरी प्रवृत्तियाँ चलती हैं तो क्या वह सुन्दरियाँ मेरे लिए सुन्दर बन सकती हैं? किसी काल में सुन्दर बन सकती हैं। मेरे अन्तःकरण में यह सँस्कार जमते चले जायेंगे। वह जो आपने चित्त नाम का क्षेत्र बनाया है क्या उसमें भगवन्! मैं यह बीज बोता ही रहूँगा? यह मैं नहीं बोना चाहता। मैं तो यह चाहता हूँ कि यह जो बीज अँकुर मेरे द्वारा उत्पन्न होते रहते हैं प्रभु! इसका स्रोत ही नष्ट हो जाये और यह स्रोत उस काल में नष्ट होगा जब प्रभु! मैं आपको सर्वस्त्र में दृष्टिपात करूँगा और मौन हो जाऊँगा कि सँसार में कुछ है ही नहीं। प्रभु! मैं तो उस काल में उत्तम बन सकता हूँ, उससे द्वितीय मेरे लिए कोई मार्ग है ही नहीं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 558 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 633
वर्ष : 47 44 समग्र वर्ष : 53

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. यज्ञुषि बनने की प्रेरणा	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-20
4. आपोज्याति का दर्शन	पूज्यपाद-गुरुदेव	21-34
5. याग और राष्ट्र	पूज्यपाद-गुरुदेव	35-36
6. ऋषियों के उद्‌गार		37
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		38-42

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व शृङ्गी ऋषि जी) के शुभ आशीर्वाद से प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग का आयोजन लाक्षागृह बरनावा में श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय के प्रांगण में दिनाँक 10 मार्च, 2019 से 17 मार्च, 2019 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सब अपने सम्बन्धियों व मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

आप सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

॥ ओ३म् ॥

यज्जुषि बनने की प्रेरणा

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव महामना जो इस संसार का नियन्ता है अथवा निर्माण करने वाला है उस परमपिता परमात्मामयी यज्ञोमयी जो स्रोत्रमयी में रत्त रहने वाला है, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी प्रत्येक मानव के हृदय में ये आकांक्षा बनी रहती है क्या वह जो महामना मेरा प्रभु है मैं उसके समीप जाने का प्रयास करू अथवा उसके समीप मानो मेरी समीपता होनी चाहिए ऐसा प्रत्येक मानव अपने में बेटा! अनुसन्धान और विचार-विनिमय करता रहा है। जिस भी काल में मानव सान्त्वना में अपनी स्थली पर विद्यमान होता है और मानव के जीवन को अपने जीवन में मानवीयता से उसका मनन करता है तो प्रायः उसके समीप एक नाना प्रकार की धाराओं का जन्म होता है। जिन धाराओं में एक विडम्बना है, जिन धाराओं में एक उत्सुकता लगी हुई है क्या मेरा अन्तरात्मा, सुखद और आनन्दवत् हो जाए। मानो ये विडम्बना प्रायः उसके मानवीयत्व में निहित रहती है। परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्र हमें कुछ प्रेरित कर रहा है। मानो आज मेरे प्यारे! महानन्द जी मुझे प्रेरणा दे रहे हैं और वह याग के सम्बन्ध में कुछ विवेचना अथवा उसके संदर्भ में जाना।

यज्जुषि का स्वरूप

आज का हमारा वेद मन्त्रः यज्जुषि आभमं ब्रहे व्रतम् सम्भवा ब्रहे क्रताम लोकाः। आज का हमारा वेद मन्त्र ये कह रहा था क्या हम यज्जुषि बनें। प्रत्येक मानव यज्जुषि बनने की कल्पना प्रायः करता रहा है। अब यज्जुषि कौन होता है? जो अपने प्रत्येक अङ्ग और प्रत्यङ्ग को जो यागों में परणित कर देता है, प्रत्येक इन्द्री को उसमें पिरो देता है। मानो उसमें कैसे पिरोया जाए—मानव के चक्षु हैं वो भी निसार को अपने को याज्ञिक दृष्टिपात करने वाले हों। मानो देखो वाणी से उद्गीत गाया जाए तो वह भी अपने प्रभु याग का ही वर्णन होना चाहिए परन्तु त्वचा में जो एक स्पर्श करने की अनुपमता है उसमें भी यही भावना और विचित्रता ज्ञान और विज्ञान से वह पिरोयी हुई होनी चाहिए। परन्तु घ्राण में सुगन्ध हो और मुनिवरो! देखो वाणी में उद्गीत गाने की प्रबल सत्ता हो, मार्धुयपन हो, यथार्थ हो और उस वाणी में निष्कपटता होनी चाहिए जिससे मानव का जीवन एक महान् और पवित्र बन सके। मेरे प्यारे! ये मानव का जीवन है क्या? एक पञ्चीकरण है और पञ्च यागों का वर्णन हमारे वैदिक साहित्य में यज्जुषि बनने की प्रायः मानव कल्पना करता रहता है, पञ्चीकरण को एकोकीकरण में वो पिरोता रहता है और उसको पिरोना चाहिए। परन्तु विचार क्या आज का हमारा वेद मन्त्र कहता है हे यज्ञंभवाः! मानव तू याज्ञिक बन अपने जीवन को याज्ञिक बना तो आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान दोनों का समन्वय करता रहे। क्योंकि आज मैं इतना समय नहीं लूँगा अपने विचारों को बहुत सूक्ष्म वाक् कह करके मौन होने वाला हूँ। परन्तु विचार क्या हमारे यहाँ प्रत्येक मानव एक-दूसरे से समन्वय रहने वाला है, एक-दूसरे में मिलान होता रहता है मानो देखो उसके सन्निधान मात्र से ये क्रियाकलाप हो रहा है। तो मानव के जीवन में भी जब मन का आत्मा से जहाँ सन्निधान हुआ बेटा! अपना क्रियाकलाप प्रारम्भ हो जाता है। बाह्य

जगत क्या आन्तरिक जगत क्या दोनों जगत में एक मानवीयता की धारा ओत-प्रोत होने लगती है।

मेरे प्यारे! आज का विचार अब मैं अपने विचारों को विराम देने अवश्य जाऊँगा क्योंकि आज मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो शब्द उद्गीत रूप में, गान के रूप में क्या अपनी विडम्बनामयी चर्चा कर सकें। वे चर्चाएँ उनकी बड़ी विचित्र होती हैं परन्तु देखो उनको एक हृदय में एक विडम्बना होती है जैसे माता का पुत्र, माता की लोरियों से पृथक् हो जाता है और उसे अक्षुधा लग रही है परन्तु अक्षुधा में वह लवनीत हो रहा है, व्याकुल हो रहा है मानो इस प्रकार मेरे प्यारे महानन्द जी भी अपने विचार व्यक्त करते रहते हैं। जैसे माता से विच्छेद हो गया हो, जैसे अच्छाइयों से इस समाज का विच्छेद हो गया हो ऐसा ये उद्गीत गाते रहते हैं।

हमारा वाक्य ये कहता है कि हम अपने में यज्ञुषि बनें और पवित्र बन करके अपने को जीवन मुक्त बनाएँ। परन्तु जीवनमुक्त की विवेचना तो मैंने कई काल में तुम्हें वर्णन की है। **जीवन मुक्त उसे कहते हैं जो तीनों शरीरों के मूल रहस्यों को जान लेता है।** मानो स्थूल, सूक्ष्म और कारण इनके मूल रहस्यों को क्रियात्मकता में जो जान लेता है, तो वह **सङ्कल्पोमयी जगत** में चला जाता है। एक परमात्मा का जगत एक ऐसा भी जगत है जो सङ्कल्पोमयी जगत है। मानव सङ्कल्प करता है और उसकी सङ्कल्पमयी जीवन की धारा पूर्ण हो जाती है परन्तु एक वह जगत है जहाँ इनके जानने की अक्षमता करके वह स्थिर रह सकता है मानो देखो अस्थिर और स्थिर दोनों प्रकार की प्रतिक्रियाओं में जो रत्त रहने वाला एक वह भी मानवीय जीवन होता है। परन्तु आज मैं मुनिवरो! देखो विशेष चर्चाएँ नहीं। मेरे प्यारे! महानन्द जी अपने दो शब्द उद्गीत रूपों में गान गाएँगे, मानो अपने विचार व्यक्त करेंगे–

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

ओ३म् समा रुद्रो भवम् ब्रह्मा यज्ञम् प्रथक प्रजाऽम् देवम् रेवाः।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भ्रद ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! आत्म चर्चा कर रहे थे और इन्द्रियों के सन्निधान की विवेचना कर रहे थे परन्तु इनका तो नित्य प्रति एक आध्यात्मिकवाद और विज्ञान को अध्यात्मिकवाद से समन्वय करना इनका प्रायः मुख्य उद्देश्य रहा है उनमें मुख्यतया रही है। जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये कहता हूँ क्या इन दोनों का एक-दूसरे से क्या समन्वय है? क्योंकि विज्ञान अपनी स्थलियों में निहित है और ये जो धर्म और मानवीयता या ईश्वरवाद है ये भिन्न है। तो मेरे पूजयपाद उसका दोनों का एकोकीकरण करते रहते हैं और ये उनका विचार है कि संसार में जो भौतिक विज्ञान है वही आध्यात्मिकवाद है और जो आध्यात्मिकवाद है वही भौतिक विज्ञान है। परन्तु ये बड़ी अनूठी वार्त्ता प्रगट करते रहते हैं और ये हमें निर्णय कराते रहते हैं कि आध्यात्मिकवाद के मार्ग से हो करके परमात्मा को प्राप्त होता है और देखो भौतिक विज्ञान के वाङ्मय में से रमण करता हुआ आध्यात्मिकता में प्रवेश कर जाता है। यदि भौतिक विज्ञान को नहीं जाना जाएगा, भौतिक विज्ञान को क्रियात्मक नहीं लाया जाएगा तो आध्यात्मिक विज्ञान को नहीं जान सकते। तो इस प्रकार देखो ये दोनों का समन्वय करते रहते हैं मानो देखो उनकी जो चरम सीमा है विज्ञान की, उसका परमपिता परमात्मा को सूत्र कह करके देखो वह शान्त हो जाते हैं। हमारा हृदय गद्‌गद् हो जाता है। मानो देखो जब यागों का प्रकरण आता है अथवा यागों का जहाँ कर्मकाण्ड आता है उस कर्मकाण्ड में भी ये बड़ी अनूठी-अनूठी वार्त्ता प्रगट कराते रहते हैं परन्तु जहाँ विज्ञान और देखो यज्ञवाद दोनों एक ही सन्तुलना में संलग्न रहते हैं। परम्परा के ऋषि-मुनियों से मानो उसका समन्वय करते हैं। परम्परा के ऋषिवर याग करते थे तो याग का

समन्वय आध्यात्मिकवाद से उसकी प्रतिक्रियाएँ होती थीं ऐसा प्रायः हमें दृष्टिपात भी होता रहता है जब इसके ऊपर अन्वेषण करते हैं।

अतीत काल और आधुनिक काल का तुलनात्मक अध्ययन

आज जब मैं जहाँ विचारों में मानो ये ले जाना चाहता हूँ कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव हमें ऐसी अनूठी स्थली पर ले जाते हैं जहाँ राम के जीवन की गाथा आती है, राम के जीवन चरित्र की आभा आती है। मानो देखो उसका जो चित्रण ये हमें प्रदान करते हैं, उसका चित्र लेते हैं तो हम आश्चर्य चकित हो जाते हैं। एक काल में राम का चरित्रः– आधुनिक जगत है। एक राम का चरित्र मानो देखो वो है जो त्रेताकाल था। वास्तव में मेरे पूज्यपाद वर्णन कराते रहते हैं राजाओं का जीवन चरित्रः एक काल में आधुनिक काल, एक काल में अतीत का काल है। अतीत के काल में जब पूज्यपाद गुरुदेव हमें ले जाते हैं अथवा रावण के काल में ले जाते हैं तो रावण एक अनूठा राष्ट्रवेत्ता था। मानो देखो जहाँ उसकी विचित्रता को लेते हैं तो वे बड़ी विचित्र आभा में परणित मानी गईं है। नाना प्रकार के यागों में चयन करने वाले राजा रावण का मानो देखो वाजपेयी याग, अग्निष्टोम याग और देखो वह रुद्र याग ये उनका प्रायः एक मुख्य याग का एक मानो क्रियाकलाप रहा अथवा ये कहो कि राष्ट्र का वो आभूषण बन करके रहा है। उस आभा में भी मैं विचित्रता और प्राथेवित्रेह मानो देखो उस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं करूँगा। विचार क्या मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मुझे वर्णन कराते रहते हैं। आधुनिक काल में ये कहता है मानव समाज क्या महाराजा कुम्भकरण मानो देखो छः माह सौचवत्त में और छः माह वह जागरूक में रहते थे। परन्तु ये भोले प्राणी जानना नहीं चाहते उनका जीवन चरित्र कितना विचित्र था। आधुनिक काल का प्राणी ये कहता है क्या ये देखो महाराजा कुम्भकरण देखो नाना प्रकार के मांसों का भक्षण करते थे, नाना सुरा पान करते थे और देखो वह योनियाँ अपने में शम्भू प्रतिपादित होती रहीं और देखो

जब मैं ये विचारता हूँ कि ये भोला प्राणी अपने महापुरुषों का कैसा एक अपमान कर रहा है। अपने भोले प्राणियों से जब मैं ये कहता हूँ कि यहाँ ऋषियों को काग की उपाधि प्रदान की जाती है। काग्भुषण्ड जी को जो महर्षि काग्भुषण्ड जी जिनका जीवन मानो बड़ा विचित्र रहा है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! जब मानो उनकी गाथा वर्णन करते हैं, उनका साहित्य वर्णन करते हैं तो मेरा हृदय गद्गद् हो जाता है। जब मैं उन विचारों में जाता हूँ—आधुनिक काल का विचारवेत्ता उनके यहाँ देखो इस मानव ने विचारा नहीं है कितना अपने पूर्वजों के अपमान में लगा हुआ है, अपमानित नहीं करना चाहिए। क्योंकि **महर्षि काग्भुषण्ड जी जिन्होंने बारह-बारह वर्ष के मानो देखो जिन्होंने बारह अनुष्ठान किए** और अनुष्ठान कैसे थे क्या वेद का अध्ययन कर रहे हैं, प्राणायाम कर रहे हैं और पत्र और पुष्पों को पान करके अपने जीवन को व्यतीत करते। लोमश मुनि और उनका, दोनों का परस्पर बड़ा समन्वय रहता था। मेरे विधाता ने अप्रोतम् ब्रह्मे कृताम् देवहाः दोनों का विचार केवल आध्यात्मिकवाद में ही रत्त रहता था और जब कोई शङ्का होती तो वशिष्ठ और माता अरुन्धती के समीप चले जाते और भी मगध राष्ट्र में राजा विष्णु के समीप जाते। परन्तु विचार क्या मैं ये उद्गीत गाने के लिए आया हूँ कि मानव को जानकारी होनी चाहिए। यहाँ काग्भुषण्ड जी के सम्बन्ध में तो देखो उन्हें कागा कहा जाता है आधुनिक जगत में और देखो कुम्भकरण का जीवन सात्विक, जिन्होंने देखो गऊ को दुग्धा आहार बनाया हो, जिन्होंने मानो लवणयुक्त अपने जीवन में भोज्य पान किया हो और विज्ञान का देखो सर्वोपरि अपने काल में रहा हो। इनके विज्ञान की धारा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे वर्णन कराते रहते हैं क्या भारद्वाज मुनि के यहाँ जब अन्वेषण करते थे तो उन्होंने एक यन्त्र की विचारधारा मानो सुकेता को और ब्रह्मचारी कवन्धी को वर्णन की थी और ये कहा था कि शम्भू ब्रह्माः देवोमही अस्ताम् ये वेद की आख्यायिका ये कहती है कि इससे यान का निर्माण हो सकता है। तो

उन्होंने बहत्तर लोकों में जाने वाले यान का निर्माण भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में उन्होंने निर्माण किया था। आज मैं इस क्षेत्र में जाना नहीं चाहता हूँ।

मैं इसलिए कि आज का जो हमारा वाक्य है वो हमारा वाक्य आकाशवाणी हमारी ये मृतमण्डल में मानो देखो एक याग का आयोजन हुआ। जिस स्थली पर याग को पूर्ण किया गया आज मेरा अन्तर्हृदय उस यजमान के साथ रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे क्योंकि तू यहाँ अपने द्रव्य का सदुपयोग करने वाला है, अपने द्रव्य को देवताओं को हुत करने वाला है, तू देवताओं को प्रदान कर रहा है। आधुनिक काल का विज्ञान इसमें लगा हुआ है क्या ये दूषित वायुमण्डल हो गया है ये कैसे पवित्र हो। तो मानो देखो वह जब इस प्रकार की आभा में यह मानव समाज अपने में लगा हुआ है, विज्ञान लगा हुआ है, वैज्ञानिक ये विचारता है कि ये कैसे शान्त हो। तो मानो देखो जब मैं इस विचार को लाता हूँ तो याग की उपाधि देते हैं। वो कहते हैं गौ घृत में ऐसी अक्षमता है घृत में अग्नि में प्रदीप्त करने के लिए अक्षमता है याग होना चाहिए।

मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन करा रहा था पुरातन काल में, इससे पूर्वकाल में मैं ये वर्णन करा रहा था क्या **आधुनिक काल के समाज ने, विज्ञान ने याग का तिरस्कार किया है।** जिस समाज में याग का तिरस्कार होता है वो संसार, वो काल बहुत ही निष्कृष्ट कहलाया गया है। परन्तु देखो यागों का तिरस्कारों का बहुत समय हो गया है, बहुत काल हो गया है। महाभारत के काल के पश्चात् इसका तिरस्कार होना प्रारम्भ हुआ और ज्ञान समाप्त होने लगा। ज्ञान समाप्त होने लगा अज्ञान की बलवती आयी तो उस समय देखो अज्ञान में याग का ही मानव तिरस्कार करता रहा और जब उसका तिरस्कार करता तो उसमें हिंसा आ जाती है। समाज में जहाँ हिंसा आई वो धर्म के नामों पर, यागों के नाम

पर हिंसा आती है उस हिंसा का परिणाम ये होता है क्या मानो देखो लाखों, करोड़ों की गणना में देखो पशुबद्ध हो करके मानव अपने शरीरों में प्रवेश कर लेता है, मानो देखो उसका परिणाम ये होता है।

आज मैं ये विचार मैं इसलिए उद्धृत कर रहा हूँ कि हमें याग जैसी परम्परा को अपनाना चाहिए। हमारे यहाँ मुझे तो स्मरण है पूज्यपाद गुरुदेव से भी मैं निर्णय कराता रहता हूँ प्रत्येक नगर में मानो प्रत्येक वास में, वासालयों में देखो पुरोहित अहिसा परमोधर्म का पालन करने वाला, वेदों का उद्घोष करने वाला, यथार्थ में विद्या प्रदान करने वाला प्रत्येक बाल्य और बालिका मानो देखो इसमें जब याग का तिरस्कार हुआ, तो मेरी माताओं का तिरस्कार हुआ, जब मातृ शक्ति का तिरस्कार प्रारम्भ हुआ तो मानो देखो इनकी विद्या लुप्त हो गयी इनको विद्या देना इस अज्ञान में समाप्त हुआ। उसका परिणाम ये हुआ कि वह माता अविद्या, अपठित होने से मानो देखो जो शृंगार ब्रह्मे पुत्र को जन्म देने वाली है वही मानो देखो वही पुत्र माता के शृंगार को हनन करने वाला बन गया है। मानो देखो इतना तिरस्कार पुरातन काल में हुआ। वह **पुरातन काल महाभारत के काल का काल कहा जाता है** जिसमें अज्ञानता में मानो देखो मेरी पुत्रियों को और ममतामयी मेरी प्यारी माता! को नार्किकता की उपाधियाँ प्रदान की गईं। ये प्रियता नहीं। नार्किकता प्रायः हो सकती है मैं इसका विरोध नहीं कर रहा हूँ परन्तु देखो वो नार्किकता इस रूप में नहीं है। माता तो माता जिसमें ममतामयी आभा का जन्म हो गया है वो माता बन करके रहेगी परन्तु वह माता है। देखो यहाँ मानव का नारर्किकपना तो मानव ने मानो देखो एक खिलवाड़ स्वीकार कर लिया, वह तो एक आनन्दमय स्वीकार कर लिया परन्तु मेरी माताओं का जो तरसों भविता बना, परन्तु वह उनका दुरिता में त्यागने का परिणाम बना। तो ये देखो समाज की कितनी दुरिता है।

मैं यह चाहता रहता हूँ कि पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराता रहता हूँ कि प्रभु! वह काल कैसा विचित्र था जब महाराजा रघु त्रेता के काल में, देवी से ये प्रश्न करते हैं सोमदेवी से, हे सोमलता! मैं याग करने जा रहा हूँ तुम क्या कहती हो? जब देवी कहती है प्रभु हमारा तो सर्वत्र जीवन ही याग है, हमारा तो सर्वत्र जीवन ही याग है याग करना चाहिए। मानो देखो ऋषिता महाराज रघु प्रसन्न हो गए और यह ऋषि-मुनियों की सभा में उद्गीत गाने लगे क्या मेरी पत्नी बड़ी प्रसन्न है मानो देखो जो मेरे जीवन में कृतियों में रत्त रहने वाली है वो कहती है कि याग, सर्वत्र याग होना चाहिए। मेरे महा मानो देखो भगवानम् ब्रहे महात्मा महाराजा रघु ने राजा ने लेकर के महात्मा की उपाधि को प्रदान किया। वह रघु मानो अपने राष्ट्र का सर्वत्र याग कर रहे हैं। वे क्यों कर रहे हैं? वह प्रजा के लिए क्योंकि वह प्रजा का निधित्व करने वाला है। जो प्रजा का निधित्व करने वाला है वही तो सर्वत्र द्रव्य को याग में परणित करेगा और याग मुनिवरो! देखो भिन्न-भिन्न प्रकार की कोई मेरे राष्ट्र में मानो कोई महापुरुष, बुद्धिजीवी दुखित तो नहीं है। मेरे राष्ट्र में माता का पूजन होता अथवा नहीं होता है। मानो देखो देव पूजन भी होता है नहीं होता ये सब राजा को अपने राष्ट्र में दृष्टिपात करना चाहिए। ये भगवान् मङ्गलम् ब्रहे व्रताम् वेद की आभा को ले करके महात्मा रघु महात्मा रघु की ये परम्परा रही है। दिलीप जी की भी यही परम्परा रही है, अज की भी यही परम्परा रही है। परन्तु दशरथ के सम्बन्ध में विचारते रहते थे।

आधुनिक काल इतना भयङ्कर बन गया है क्या ये राजा देखो अज्ञानता में देखो साहित्य से लुप्त हो करके, साहित्य देखो अग्नि के मुख में चला गया साहित्य मानो देखो पात्रों में भ्रष्ट हो गया उनके भ्रष्ट होने पर देखो यहाँ राजा दशरथ जिन्होंने देखो अपने सन्तान के लिए तीन संस्कार तो कराए वह भी एक अपवाद माना गया था परन्तु देखो

उन्हें भी ये कहते हैं कि उनके तो दस हजार पत्नियाँ कहलाती थीं। आज का मानव कैसा भ्रष्ट बन गया है मैं विचार नहीं रहा हूँ ये क्या विचित्र इस मानव की चित्तियों में रहती है। क्योंकि जैसा समाज, काल मध्य काल में बना उसी काल को लेकर के वाम मार्ग समाज में मानो देखो राजाओं पर, महापुरुषों पर, साहित्यों पर देखो उन्होंने लांछन साहित्यों पर देखो उन्होंने अज्ञानता की प्रतिभा का एक जन्म दिया है जो मुनिवरो! देखो मानव उसी प्रकार स्वीकार करता है। आधुनिक काल का देखो एक शिक्षित ये कहता है जो शिक्षा को अध्ययन करता है कि मैं राम और रावण कोई संसार में राजा महाराजा नहीं हुए परन्तु देखों ये कहते हैं वो अपने में देखो ऊँची उपाधियों को प्राप्त कर रहे हैं परन्तु मैं ये उच्चारण कर रहा हूँ अरे! अतीत का काल तो सौ वर्षों, सौ प्रणालियों के पश्चात् उसकी प्रतिभा का प्रायः मानो परिवर्तन हो जाता है। उसके मूल में क्या है जो ऐसा कहते हेतु देते हैं मानो देखो एक अपनी कृतिका को प्रगट करते हैं। मानो देखो वो सभ्य समाज में या वैदिक समाज में उसका कोई मूल नहीं है, हम जैसी दृष्टियों में कोई मूल नहीं माना गया है। परन्तु वह साहित्य है अपनी जगह सारस्वत है, उसको हम अपने से समाप्त कर देते हैं, तो हमारापन संसार में कुछ नहीं रह जाता। परन्तु इसी प्रकार मैं विचार देने के लिए क्या आया हूँ क्या यागों का तिरस्कार नहीं होना चाहिए। यदि याग का तिरस्कार हो गया है, याग अपने में तिरस्कृत हो गया है उसको प्रत्येक मानव को अपनाना चाहिए। मानो देखो माता का तिरस्कार हुआ तो यज्ञवेदी का तिरस्कार हुआ। यज्ञवेदी और माता का तिरस्कार हुआ तो अज्ञानता से अज्ञानता आई, ज्ञान का तिरस्कार हो गया। जब ज्ञान का तिरस्कार हो गया अज्ञानता बलवती आई तो यहाँ मानव देखो मिथ्या कल्पना करने लगा। उस मिथ्या कल्पना का परिणाम ये हुआ क्या अपने पूर्वजों का मानो देखो न तो सत्कार रहा है, न अपने पूर्वजों को उस रूप में माना जाता है जिस रूप में वो थे। परन्तु देखो इसमें कौन दोषी है, इसका

दोषी कौन है? **महाभारत काल के पश्चात् मानो देखो इसका जो दोषी है वो बुद्धिमान प्राणी हैं।** मानो देखो जिनको एकोकी वचन में देखो धर्मज्ञता की वृत्तियाँ उसमें परणित कर दईं। मैं आज देखो केवल वही उसका दोषी कहलाता है। **आज देखो हम अपनेपन को अपना नहीं सकते, अपनाना चाहिए।** मैं याग के सम्बन्ध में विचार देने जा रहा था, मैं विज्ञान के युग में प्रवेश होना चाहता था।

आज का विज्ञान आधुनिक, काल का जो विज्ञान है वह इकाई में रत्त हो रहा है, वो इकाई में भ्रमण कर रहा है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने मुझे विज्ञान के जब मैं इनके द्वारा अध्ययन करता था तो मुझे एक-एक वेद मन्त्र का जब उन्होंने स्वरूप वर्णन किया तो उस स्वरूप में मुझे सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक विज्ञानशाला के रूप में दृष्टिपात आता था और एक-एक परमाणु से ब्रह्माण्ड की रचना का प्रादुवृत्तियों में रत्त होता रहा है, वह विज्ञान अब तक नहीं आया है। एक-एक रक्त के बिन्दु से मानव का साक्षात्कार होना वह विज्ञान कहाँ है? वर्तमान में वह विज्ञान नहीं रहा है परन्तु जब मैं अतीत काल में प्रवेश करता हूँ तो हमारे महापुरुष मानो याग करते थे यागों के साथ शब्दों में चित्रों का दर्शन करते रहते थे। परन्तु देखो याग का, एक याग तो विज्ञानशाला है इसमें विज्ञानवेत्ता बड़े-बड़े विचारशील मानो देखो याग के कारण विज्ञानवेत्ता बने हैं। भौतिक विज्ञानवेत्ता आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता जो बाह्य क्रियाकलाप है मैं ये नहीं जान पाया हूँ। अब तक जब मैं विद्वानों से ये प्रश्न करने के लिए तत्पर भी होता हूँ क्या हे भोले प्राणियों! तुम इस याग में मांस की आहुति देते हो, हिंसा करते हो मैं यह जानना चाहता हूँ जो बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों याग हैं दोनों में ही हिंसा नहीं तो बाह्य जगत में हिंसा क्यों लाते हो तो इसका मुझे कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता। परन्तु देखो जब मैं ये विचारता हूँ कि हिंसा नहीं होनी चाहिए। जैसे मानव का हृदय शुद्ध पवित्र याग कर्म करने के लिए क्रियाकलापों

में रत्त रहा है इसी प्रकार मानव का साकल्य भी उसी प्रकार का पवित्र होता है, उसी प्रकार की उसकी धारणा कर्मकाण्ड भी उसी प्रकार की धारा में सदैव रत्त होता रहा है। आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को ये वर्णन करा रहा हूँ आधुनिक काल का विज्ञान इसमें लगा हुआ है कि हम कैसे मानो इस आरोपन को ये जो हमारे यहाँ दूषित वायुमण्डल बन गया है वायु तरङ्गें दूषित हो गयी हैं तो ये कैसे पवित्र हों तो मानो देखो हम यह कहते हैं कि याग करो, याग होना चाहिए। प्रत्येक गृह में याग हो, राष्ट्र को, राजा को याग करना चाहिए। अपने गृह में जिससे प्रजा में याग का प्रचलन आ जाए और देखो ये जो मानो एक-दूसरे की आभा में प्रकृति के गर्भ में से नाना प्रकार के रसों को अपने में धारण करता हुआ मानो देखो यहाँ नाना प्रकार का अक्षुद्रवाद परणित हो गया है ये समाप्त होता चला जाएगा।

परन्तु देखो मेरी प्यारी माता-पिता याज्ञिक पुरुष ये जानते हैं कि सन्तानों का या कैसी सन्तानें होनी चाहिएँ। माता मदालसा का जीवन जब पूज्यपाद गुरुदेव प्रगट कराते हैं तो माता मदालसा ब्रह्मवेत्ता बना रही है पुत्र को, परन्तु जब ब्रह्मवेत्ता त्यागी और तपस्वी पुत्रों का जन्म होगा माता जब शिक्षित हो करके वेदों का उद्घोष उद्गीत गाने वाली बनेगी तो मानो देखो उसका पुत्र महान् बन करके और माता की रक्षा कर सकता है। और जो माता मानो उसको उज्ज्वल नहीं बन सकती तो वह माता की रक्षा कैसे करेगा? कोई कारण नहीं है कि वो माता की रक्षा कर सके, वह माता के एक समय शृंगार को हनन तो कर सकता है परन्तु उसकी रक्षा नहीं कर सकता।

परन्तु जब मैं इन वाक्यों के ऊपर जाता हूँ इसलिए हे मानव! हे राजन्! तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो याग को अपना और माता को अपना, दोनों को अपनाने से ये समाज ऊँचा बनेगा। परन्तु सङ्कीर्णता माता के हृदय में न रहे और राजा अहिंसा परमोधर्मी

बन करके और एकोकी धर्म को अपनाने वाला हो। परन्तु जब अज्ञानता आती है याग का तिरस्कार होता है, माता का तिरस्कार होता है तो नाना प्रकार की रूढ़ियों में राष्ट्र का परिवर्तन हो जाता है और नाना प्रकार की जो रूढ़ियाँ हैं वो राष्ट्र के लिए घातक कहलाती हैं, राष्ट्र के लिए विनाशदायक होती हैं। नाना प्रकार के मानो देखो रूढ़ियाँ–कोई यहाँ मोहम्मद के मानने वाला है तो कोई देखो जिस समाज में मेरी प्यारी माता का कोई अस्तित्त्व नहीं रहता। जब मैं यह विचारता हूँ कि मोहम्मद के मानने वाले क्या करते हैं तो मानो देखो मुझे दुखद होता है कि माता का तिरस्कार करते हैं। माता का कोई अस्तित्त्व उनके हृदयों में या उनकी मानो देखो एक विचारधारा में नहीं रह पाता परन्तु देखो मुझे दुखित होता, मैं दुखित होता रहता हूँ कैसी रूढ़ि बन गयी है। ये मानो परमात्मा के धर्म के नामों पर रूढ़ियाँ बन रही हैं जब मैं देखो और भी नाना प्रकार की रूढ़ियों में प्रवेश करता हूँ तो मुझे ये आता है हे राजन्! हे राजा! या तो तू अपने राष्ट्र में रूढ़ियों को धर्म को एकोकी वचन बना करके अपने राष्ट्र को ऊँचा बना, नहीं तो तेरी मृत्यु हो जानी चाहिए। परन्तु देखो ऐसा सदैव परम्परागतों में प्रायः ऐसा होता रहा है क्या अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना–प्रजा राजा क्या चाहता है। राजा का निर्वाचन क्यों हुआ करता है क्योंकि कर्त्तव्यवाद में समाज को लाने के लिए वह तत्पर हो जाए और यदि वह कर्त्तव्यवाद की वेदी पर समाज को नहीं ला सकता, अपने याग जैसे ऊर्ध्वा क्रियाकलाप को नहीं अपना सकता जो परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके और ये उस काल तक सुगन्धि काल चलेगा जब तक ये संसार रहेगा। आज मैं विशेष चर्चा अपने पूज्यपाद गुरुदेव को प्रगट कराना नहीं चाहता हूँ।

मैं केवल ये विचारों में, हे राजन्! तू मानो देखो प्रत्येक धर्म के आचार्यों को प्रत्येक जिसको तू नाना धर्म कहता है नाना धर्म तो होते नहीं है धर्म तो एकोकी होता है यह बहु अब्रहा यह बहुवचन, एकोकी

वचन है धर्म केवल एक है तू सब धर्मों के राजाओं को यदि तू ये स्वीकार करता है क्या मैं नाना प्रकार की रूढ़ियों के आचार्यों का एकोकीकरण करना चाहता हूँ तो तेरा ये प्रयास बड़ा विचित्र बनेगा और तू महान् बन करके प्रजा को महान्ता की वेदी पर ला सकता है। मानो देखो प्रत्येक धर्म के आचार्यों का शास्त्रार्थ होना चाहिए और जो मानो देखो तर्क सिद्ध हो करके धर्म और विज्ञान की धारा पर स्थिर हो जाए उसको अपनाने में राष्ट्र का मानो कोई दोषारोपण नहीं होगा। ये राष्ट्र का कर्त्तव्य है, प्रत्येक मानव का ये कर्त्तव्य है कि हम अपनी वैदिक परम्परा जिसमें प्रकाश है, जिसमें सारस्वता सत्य है मानो देखो उसको अपनाना हमारा प्रिय कर्त्तव्य कहलाता है। उसमें विज्ञान है देखो पाँचों प्रकार की गतियों वाला जो विज्ञान है ये वैदिक साहित्य में निहित है, परमाणुवाद इसमें निहित है। एक-एक परमाणु में वेद ही तो ये घोषणा कर सकता है कि एक-एक परमाणु में ब्रह्माण्ड का ब्रह्माण्ड निहित रहता है और कोई नहीं कह सकता? एक वेद का वाक्य कहता है इस वाक्य को, उसी वेद की धारा को नाना भाषाओं में मानव देखो परिवर्तित करता रहा है परन्तु देखो उसको परिवर्तित करके वो कहता है नाना परमाणु हैं, अनन्य परमाणु हैं ब्रह्माण्ड के चित्रों में चित्रित होता हुआ ब्रह्माण्ड निहित होता है।

परन्तु देखो आधुनिक काल में ये उच्चारण कर रहा हूँ क्या देखो यहाँ अपने पूर्वजों का तिरस्कार न करें, यज्ञों का तिरस्कार माताओं का तिरस्कार नहीं होना चाहिए। जब इनका तिरस्कार हुआ है जिस भी काल में वही काल मानो देखो विकृत रहा है, वही काल मानो देखो रक्त भरी क्रान्ति वाला काल रहा है, वही मानो मानव का भक्षण करने वाला काल रहा है, वही माताओं के शृंगारों को हनन करने वाला काल रहा है।

आज का विचार मैं विशेष न देता हुआ, आज का विचार मैं ये दे रहा हूँ कि हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मानो

देखो ऐसे वाममार्ग के युग में देखो तुम यागों में देवाम् ब्रह्मा देव पूजा कर रहे हो ये मेरा बड़ा, मानो मैं बड़ा हर्ष ध्वनि करता रहता हूँ। यहाँ मोहम्मद के मानने वाला वाममार्ग है जो हिंसा कर-कर के अपने उदर की पूर्ति करता है। मानव देखो उन्हीं की धारा को ले करके मानव बन गया है, प्रत्येक मानव उसी धारा में परणित हो गया है। मानो देखो ये विचार हमारे में देखो नहीं रहना चाहिए। आज वह भी आत्मवत्त हैं आत्म योनि को साथ ले करके आए हैं। हमारे शरीरों में भी आत्मा हैं परन्तु आत्मा-आत्मा से जहाँ मेरी प्यारी माता आत्मा, आत्मा से वार्त्ता प्रकट करती है मानो देखो वो बालक से भी वार्त्ता प्रगट करने में मानो शान्त हो जाती है माता मदालसा गर्भ में शिशु है और रात्रि मध्यकाल में देखो अपनी प्रवृत्तियों को अन्तर्हृदय में गर्भ में ले जाती और जो गर्भ में रहने वाला शिशु जो पनप रहा है उससे अपना तारतम्य मिला करके वेद का उद्घोष करती रहती। आज मैं जब उस विज्ञान को या उस मानो देखो मर्म में जाता हूँ तो मेरा अन्तर्हृदय अद्भुत ही हो जाता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मानो मेरे हृदय की ये कामना रहती है क्या समाज पवित्र बने, समाज में मानवता आ जाए और समाज में मानो देखो अपने पूर्वजों के साहित्य के इतिहास का तिरस्कार नहीं होना चाहिए। उसमें मानवीयता ओजस्ता पवित्रता होनी चाहिए जिससे हमारा मानवीय जीवन ऊँचा बने और भविष्य और वर्तमान उन तीनों में मानो देखो अपने में पारायण बने रहें। ये आज का विचार अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पा रहा हूँ। मैं पुनः ये उच्चारण कर रहा हूँ कि हे यजमान! तेरे जीवन की प्रतिभा महान्, और तेरे गृह में सदैव द्रव्य का सुदपयोग होता रहे, यही मानवता है। द्रव्य का सदुपयोग होना ये मानवीयता कहलाती है क्योंकि ये द्रव्य परमपिता परमात्मा का द्रव्य है, परमात्मा इसका प्रतिनिधि है। मानो तुम्हारे तो शरीरों का, गृहों का क्रियाकलाप चलना है और यदि तुम उस द्रव्य को ले करके प्रभु के समर्पित करते क्योंकि यह द्रव्य प्रभु का है, प्रभु ही

उसके मूल में विद्यमान है। तो द्रव्य मानो देखो तुम्हारे क्रियाकलापों में परणित होकर तुम्हें स्वर्ग के मार्ग पर ले जाएगा। यह आज का वाक्य अब हमारा समाप्त होने जा रहा है। मैं पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी! ने अपने उद्‌गार प्रगट किए। इनके उद्‌गारों में कितनी विडम्बना है न प्रतीत आधुनिक काल प्रायः ऐसा ही है जैसा ये उच्चारण करते हैं। पुरातन काल अतीत का काल तो बड़ा एक विचित्र काल रहा है। परन्तु महानन्द जी अपनी विडम्बना में, अपने शब्दों में एक विडम्बनामयी शब्दों का उद्‌गीत गाते रहते हैं। मानो चलो अब्रहाः सम्भूती लोकाः इनकी इच्छा परमपिता परमात्मा पूर्ण करेंगे। वह काल जिस काल में आएगा जब मानव एकोकीकरण में परणित हो जाएगा पृथ्वी का प्राणी। आज का विचार अब ये समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए द्रव्य का सदुपयोग करते हुए यज्ञशाला में अपने द्रव्य को मानो त्यागा प्रवृत्ति से वायुमण्डल को शोधन करना यह हमारा कर्त्तव्य कहलाता है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के यह क्रियाकलाप मानवीय मस्तिष्कों में निहित रहा है और ऋषि-मुनियों के क्रियाकलापों में रहा है। आज का विचार ये समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाहाः यम सर्वमं भागा माग्र।

दिनाँक : 24 अक्टूबर, 1985
समय : प्रातः 9:00 बजे
स्थान : माछरा, मेरठ

।। ओ३म् ।।

आपोज्योति का दर्शन

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वह परमपिता परमात्मा वरणीय माने गए हैं। जो मानव उसका वरण कर लेता है अथवा उसे वर लेता है, वह प्रायः उस को प्राप्त हो जाता है। तो इसलिए हमारा वेद मन्त्र कहता है, हे मानव! तू उसको अपना वरण बना, उसको वरने वाला बन, क्योंकि वह सर्वत्र विद्यमान है। संसार में कोई स्थली ऐसी नहीं है जहाँ वह देव न हो, समुद्रों की कोई तरङ्गें ऐसी नहीं हैं जहाँ वह परमपिता परमात्मा विद्यमान न हो, पर्वतों की कोई भी गुफा ऐसी नहीं है जहाँ वह न हो। तो इसलिए प्रत्येक मानव को इसमें गम्भीरता से अध्ययन करना चाहिए कि जब वह परमपिता परमात्मा सर्वत्र विद्यमान है, तो हमारे लिए कौन-सी स्थली ऐसी है जहाँ हम मिथ्यावाद में परणित हो जाएँ, पाप-कर्म करने के लिए तत्पर हो जाएँ। क्योंकि वह न्यायकारी है, न्याय ठीक कहलाता है। एक मानो राजा न्यायालय में विद्यमान रहता है, परन्तु वह न्याय कर रहा है, बहुत-सा पाप-कर्म ऐसा है जो राजा से ओझल रहता है, क्योंकि वह अनभिज्ञ है। **वह परमपिता परमात्मा तुम्हारे मनस्तत्त्व कर्मों की प्रतिभा को दृष्टिपात कर रहा है।** जब कोई भी स्थली ऐसी नहीं है जहाँ वह विद्यमान न हो, तो उसका न्याय भी विशाल है, उसके न्याय से कोई कर्म मानव का ओझल नहीं होता। तो इसलिए परमपिता परमात्मा को जो मानव अपना वरणीय

बना लेता है अथवा उसे वर लेता है, तो मुनिवरो! देखो वह मानव महान् बन जाता है, वह पवित्र बन जाता है। इस संसार में नाना प्रकार के, नाना प्रकार की क्रियाओं में रमण करने वाला मानव स्वार्थ में परणित हो सकता है, परन्तु परमपिता परमात्मा ऐसा अमूल्य है; ऐसा महान् है कि उसकी महानता प्रत्येक वस्तु में विद्यमान रहती है। तो इसलिए हमें उस परमपिता परमात्मा को अपना वरण बना लेना चाहिए, अथवा वर लेना चाहिए।

सङ्घात

आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना में ले जाना नहीं चाहता हूँ। आज के हमारे वेद पाठ में हमारे यहाँ आपो का वर्णन हो रहा था। हमारे यहाँ आपो नाम है सङ्घात का, सङ्घात का नाम ही आपो कहलाता है– जैसे संङ्गतिकरण है। प्रत्येक वस्तु बेटा! इस संसार में जिसका भी निर्माण होता है उसमें सङ्गतिकरण हमें प्रायः दृष्टिपात आता है। कोई भी मानव का क्रियात्मक कर्म हो उसमें, सर्वत्र में सङ्गतिकरण है। मुझे स्मरण आता रहता है एक समय बेटा! महर्षि उद्दालक गोत्र में एक ऋषि हुए हैं विश्वेसर्वा। परन्तु विश्वेसर्वा एक समय आपो-ज्योति में ध्यानावस्थित हो गए थे। आपो में ज्योति का ध्यानावस्थित हो करके उनके आश्रम में महर्षि विभाण्डक मुनि आ गए। विभाण्डक मुनि ने दृष्टिपात किया कि विश्वेसर्वा ने यज्ञशाला का निर्माण किया हुआ है और उसमें अब जल को प्रोक्षण कर रहे हैं। जल की धारा उसमें परणित कर रहे हैं। तो महर्षि विभाण्डक ने कहा, ऋषिवर यह क्या दृष्टिपात कर रहे हो? उन्होंने कहा कि प्रभु मैं इसमें सङ्घात और इसमें सङ्गतिकरण को दृष्टिगोचर कर रहा हूँ क्योंकि आपो को हमारे यहाँ सङ्घात कहते हैं। व्याकरण के आचार्यों ने इसको सङ्घात माना है, परन्तु इसी में सङ्गतिकरण दृष्टिपात कर रहा हूँ। जैसे माता भोजनालय में नाना प्रकार के रसों को ले करके रसास्वादन कर देती है, तो भिन्न-भिन्न प्रकार के रसों का वह सङ्गतिकरण कर देती है। जब सङ्गतिकरण कर देती है तो

भोजनालय को अग्नि में तपा देती है, अग्नि उसे तपा देती है तो वह सङ्गतिकरण बन जाता है। जैसे यज्ञशाला में यजमान विद्यमान हो करके अपनी देवी से कहता है, हे देवी! आओ प्रातःकालीन हम सङ्गतिकरण करें। वह सङ्गतिकरण करने के लिए यज्ञ में, यज्ञशाला में, अग्नि में, अग्नि के मुख में साकल्य अर्पित करने लगते हैं। वह साकल्य भी सङ्गतिकरण है। कौन-सी सामग्री, कौन-सा साकल्य, कौन-सा द्रव्य कितनी मात्रा में उनका सङ्गतिकरण होना चाहिए। उस सङ्गतिकरण के द्वारा जब अग्नि में, उस सङ्गतिकरण अग्नि में प्रवेश किया जाता है तो अग्नि उसको भव्य सुन्दर बना देती है, उसको व्यापक सूक्ष्म रूप बना देती है। उसको परमाणु बना देती है, वही अग्नि का सङ्गतिकरण हो करके वह शब्द द्यौ-लोक में प्रवेश करता है। ऋषि क्या कहता है? ऋषि कहता है कि सङ्घात–इस आपो का नाम ही जल है। नाम ही क्या सङ्घात कहलाया जाता है। इसको मानव जब पान करता है तो अमृतमयी जान करके पान करता है, क्योंकि यह प्राणवर्द्धक है। यह प्राण सूत्रों से सङ्घात कटिबद्ध हो रहा है।

प्रभु की महती

विश्वेसर्वा कहता है मैंने कहीं वेदों में यह अध्ययन किया है 'मातास्वर्ण वर्णतः आपो हिरण्यमं बिन्दु' जब शिशु माता के गर्भ में प्रवेश करता है तो यह आपो जो ज्योति है, जो जल है, यही यज्ञशाला में होता अमृत जान करके पान करता है। वास्तव में अमृत का वह प्राण है। जब बालक माता के गर्भस्थल में होता है तो वहाँ कैसे वास करता है शिशु? अग्नि, अग्नि की धाराओं में जल विद्यमान होता है। माता के गर्भस्थल में जब वेद के ऋषि ने एक प्रश्न किया–'बाल काण्डात् वाल्वृती वृतो शिशुः वाचन्नमो वाता व्रतंवृही विश्वासाः' वेद का मन्त्र कहता है; वेद के मन्त्र ने एक प्रश्न किया कि बालक जब माता के गर्भस्थल में शिशु रहता है तो बालक का ओढ़न क्या है और उसका

आसन क्या है? तो मुनिवरो! देखो उसका आश्रित क्या है? ऋषि इसका भावार्थ करता हुआ कहता है कि माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु होते हैं, जो उस बालक का ओढ़न भी आपो ज्योति कहलाता है। उसको जल कहते हैं, जल ही उसका ओढ़न होता है, जल ही उसका आसन बना हुआ होता है, जल ही उसके पाँसे बने हुए होते हैं। माता के गर्भस्थल में शिशु रहता है, परन्तु ओढ़न भी आपो ज्योति है, नीचे का आसन भी वही बना हुआ है, पाँसे भी जल बने हुए हैं। माता के गर्भस्थल में वह आपो ही तो रक्षा कर रहा है। मेरे प्यारे! प्रभु! तू कितना विज्ञानमयी माना गया है। जल के आङ्गन में रहने वाला वह बालक माता के गर्भस्थल में निर्माण करने वाला प्रभु है, निर्माण कर रहा है। बहत्तर करोड़, बहत्तर लाख, दस हजार, दो सौ दो (72,72,10,202) नाड़ियों का निर्माण वह शिशु के आभा में उसका निर्माण करने वाला वह विश्वकर्मा है, जो सर्वत्र विद्यमान है।

हे माँ! तेरे वह प्रभु कितना निकट रहता है। तेरे गर्भ में निर्माण कर रहा है। परन्तु माता को कोई प्रतीत नहीं होता कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है? बाल्य-बालिका का भी प्रतीत नहीं होता। कैसा मेरा प्यारा प्रभु विज्ञान में रत्त रहने वाला है। देखो तो कहीं तारा मण्डलों की माला बनी हुई है, उसका बिन्दु ब्रह्मरन्ध्र में परणित हो जाता है। कहीं बुद्धि का निर्माण हो रहा है, बुद्धि भी कितने प्रकार की है, जैसे बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा, प्रज्ञा–चतुर्थ प्रकार की बुद्धि का निर्माण होता रहता है। उसी आपो में विद्यमान होने वाले शिशु के द्वारा उसका तारतम्यमय लगा हुआ बाह्य जगत से, उसका तारतम्य लगा हुआ है ज्ञान और प्रकाश से। वह प्रकाश में ही अपने में दृष्टिपात करता रहता है, निहारता रहता है। वह प्रभु निर्माण करने वाला है, निर्माण हो रहा है, मेरी भोली माँ उस निर्माणवेत्ता से वञ्चित रहती है। वह मेरा प्यारा प्रभु कितना विज्ञान में रत्त रहता है। मन की चार दशा हैं मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार। चित्त और अहङ्कार यह मन की चार दशा हैं–चारों दशा, चारों

अवस्था, चार अवस्था कहलाती हैं जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति और एक तुर्या कहलाती है। यह चार अवस्थाओं का निर्माण उसके स्वाभाविक गुणों के साथ परणित होता रहता है। मैं कहाँ चला गया हूँ? प्रभु की महती का वर्णन कर रहा हूँ। प्रभु कितना विज्ञान में रत्त रहने वाला है। मानव का निर्माण कर रहा है। वही बालक माता के गर्भ से जब पृथक् होता है, वही बालक विद्यालयों में प्रवेश हो करके विज्ञान की उड़ान उड़ने लगता है। वही लोक-लोकान्तरों की उड़ान उड़ने लगता है। कोई आध्यात्मिक विज्ञान में प्रवेश हो जाता है, परन्तु निर्माणवेत्ता वहाँ भी प्रभु ही है, क्योंकि बुद्धि में जो नाना प्रकार के तत्त्व विद्यमान हैं। जब ब्रह्मरन्ध्र में योगेश्वर प्रवेश करता है, प्राण आत्मा के सहित जब ब्रह्मरन्ध्र को प्राणों की धुकधुकी के साथ जब प्राण की गति ब्रह्मरन्ध्र की गति, प्राणों के बीच में गति करती है, तो यह नाना प्रकार का ब्रह्माण्ड है लोक-लोकान्तरों वाला, यह जो नाना निहारिकाओं वाला यह जगत है, योगी के लिए खिलवाड़ बन जाता है। क्योंकि देखो उसकी मेधामय ही बुद्धि जागरूक हो जाती है। तो ऋषि विभाण्डक ने विश्वेसर्वा से पूछा तो उन्होंने कहा प्रभु मैं सङ्घात कर रहा हूँ, मैं इस आपो ज्योति में प्रभु का दर्शन कर रहा हूँ। क्योंकि यही तो रक्षार्थ के लिए रक्षा करने वाला है; अन्न और प्राण में, अन्न और जल में दोनों ही तो प्रतिभा मुझे दृष्टिपात आती हैं। एक अन्नादि है तो यह प्राणवर्द्धक जल है। मानव को जल, अन्न प्राप्त होता है तो प्राण उसका सुचारू रुप से गति करता है और जब अन्न है जल नहीं है तो जल के बिना मानव का प्राण चला जाता है। तो इससे यह सिद्ध हुआ कि आपोमयी ज्योति जो जल है यह अमृत को बहाने वाला है। यह कृषि को, कृषक की भूमि को पवित्र बना करके आपो में परणित कर देता है।

जैसे मानव का शरीर है, जिस अङ्ग से प्राण चला जाता है वही शरीर का भाग निष्क्रिय बन जाता है। तो प्राण-शक्ति को लाने के लिए

आज हमें पुनः से प्राण की उपासना करनी है। उस **आपोमय ज्योति बन करके रहता है प्राण,** उसकी उपासना करनी है, क्योंकि उसकी उपासना करने से हमारे जीवन में, हमारी मानवीयधारा में पुनः से प्राण का सञ्चार हो जाता है। जिस अङ्ग से प्राण चला जाता है वह प्राण निष्क्रिय, शरीर निष्क्रिय बन जाता है; उसको क्रिया में लाने के लिए हमें आश्रय लेना होगा। नाना प्रकार के उस प्राण सूत्र को पुनः से अपने में धारण करना होगा। महाराजा विश्वेसर्वा की महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज से यह चर्चा हो रही थी।

तीन आचमन

इस चर्चा को होते हुए यज्ञ में जब यजमान यज्ञ करता है, यजमान यज्ञ में परणित होता है, तो वह आचमन करता है। तीनों की आभा में आचमन करता हुआ वह कहता है कि मेरा ओढ़न भी यह जल ही है और मेरा आसन भी जल ही बना हुआ है। जहाँ जल के परमाणु नहीं होते, वहाँ मैं श्वास भी नहीं ले सकता; वहाँ मेरा यह प्राण निष्क्रिय बन जाता है। यह तीन आचमन इसलिए करता है। यह तीन प्रकार के ताप मानव के द्वारा हैं; तीन प्रकार के गुण हैं मानव के द्वारा रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण वह कैसा आचमन करने वाला कि मेरे तीनों गुणों में सामन्यता रहनी चाहिए। इनमें देखो रजोगुण, तमोगुण बलवती न हो जाए, जिससे मेरे जीवन का ह्रास हो जाए। तो मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल यह उच्चारण कर रहा हूँ कि आपोमयी ज्योति का दिग्दर्शन करना चाहिए। जब हम सङ्गतिकरण करने लगते हैं, उस सङ्गतिकरण में ही जीवन है, सङ्गतिकरण में ही मानवता की ज्योति विद्यमान रहती है, जिसके ऊपर हमारे यहाँ प्राण की चिकित्सा वालों ने मानव चिकित्सा का प्रारम्भ किया था। प्राण के माध्यम से मानव अपने में महान् बनता हुआ ब्रह्मवर्चोसि बन करके, ब्रह्मचरिष्यामि बन करके मृत्यु को विजय करने वाले ब्रह्मवेत्ता हुए हैं।

तीन प्रतिभा

मैंने कई काल में तुम्हें वर्णन करते हुए कहा था महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज जब वह तप करने लगे तो उन्होंने तीन शब्दों की विवेचना की। ब्रह्मो वाचाः उन्होंने कहा है कि ब्रह्मचारी कौन है? ब्राह्मण कौन है? ब्रह्मवर्चोसि कौन है? यह प्रश्न करते हुए उन्होंने यह कहा कि **ब्राह्मण** वह है जो कण-कण में ब्रह्म को दृष्टिपात करता है। एक-एक कण-कण में जो ब्रह्म को दृष्टिपात करता है वह ब्राह्मण कहलाता है। परन्तु देखो जो प्रत्येक श्वास के द्वारा ब्रह्म को अपने में स्मरण करता है वह **ब्रह्मचारी** कहलाता है। 'ब्रह्मवर्चो ब्रह्मवाचाः वेद के ऋषियों ने कहा है, ब्रह्मचर्य के दो ही शब्द कहलाते हैं, एक ब्रह्म है तो दूसरा चर्य है। **ब्रह्म नाम परमपिता परमात्मा का है और चर्य नाम प्रकृति का है।** दोनों का समन्वय हो करके सृष्टि का प्रादुर्भाव होता है, दोनों का समन्वय हो करके संसार की रचना होती है, दोनों का समन्वय हो करके सङ्गतिकरण हो करके मानव बलवती बनता है। 'बलग्रहण रुद्र भागाः' ब्रह्मवर्चोसि का हमें सदैव पालन करना है, ब्रह्मवर्चोसि को जानना है। ब्रह्म को जानना है, जो इस संसार में कण-कण में व्याप्त हो रहा है।

प्रत्येक मानव साधना के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहता है, साधना में रत्त रहना चाहता है, तो साधना का केवल एक मूल मन्त्र है। साधना एक मूल में ज्योति है। हमारे यहाँ **ब्रह्मवर्चोसि** बनने वाला ब्रह्मचारी अपने में प्रत्येक श्वास सूत्र को ओ३म् रूपी धागे में जब पिरो देता है, ओ३म् रूपी धागे में पिरो करके, जब उसकी माला बना करके, गहना बना करके वह अपने में धारण कर लेता है, तो वह ब्रह्मचारी बन जाता है। 'ब्रह्मचरिष्यामि गतो ब्रह्मनालाप लोकाः' **एक-एक वाक्य, एक-एक प्रतिभा, एक-एक श्वास की गति ब्रह्मसूत्र में पिरोई हुई है।** जैसे वेद के मन्त्र हैं, वेद की ऋचाएँ हैं, वेद की ऋचाएँ प्रारम्भ में ओ३म् उच्चारण किया जाता है। प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही ओ३म् सूत्र में अपने

को पिरोया हुआ स्वीकार करता है, जैसे ओ३म् का उच्चारण हुआ, उसके पश्चात् वेद की ऋचा का, ऋचा का वर्णन होता है। उस ऋचा में ज्ञान और विज्ञान है, उसका वर्णन होता है। जब उसका वर्णन होता है तो वरणीय बनाने के पश्चात् वह माला बन गई है। प्रत्येक वेद का मन्त्र ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है क्योंकि **ओ३म् सूत्र है और ऋचा ज्ञान और विज्ञान है।** ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोये होने से वह एक माला बन जाती है। शब्द छन्द रूपों में कटिबद्ध हो करके प्रत्येक संसार का ज्ञान और विज्ञान ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है।

सूत्र

मेरे पुत्रो! मैं सूत्रों की चर्चा विशेषता में तुम्हें नहीं करा रहा हूँ। विचार-विनिमय केवल यह है कि प्रत्येक मानव को सूत्र के ऊपर विचार-विनिमय करना है, क्योंकि हमारा जीवन भी एक सूत्र में पिरोया हुआ है। यह सूत्र क्या है? मनके क्या हैं? जो सूत्र में पिरोये हुए हैं। मानव जब एक-एक इन्द्री के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ करता है तो प्रत्येक इन्द्री किसी का मनका बने हुए है, किसी सूत्र में पिरोई हुई है। उस सूत्र को हमें चिन्तन में लाना चाहिए, प्रत्येक मानव उस सूत्र को चिन्तन में लाने का प्रयास करता है तो याज्ञिक बन करके महामना देव की महिमा का गुणगान गाने लगता है। वह सूत्र क्या है? प्रत्येक इन्द्री किसी सूत्र में पिरोई है, किसी देवता से उसका समन्वय रहता है। जैसे **मानव के नेत्र हैं उसका देवता सूर्य कहलाता है।** परन्तु नेत्रों की प्रतिभा चन्द्रमा अमूल्य देवता कहलाता है। **अग्नि भी नेत्रों का अमूल्य देवता कहलाता है।** तारा मण्डलों से गुथा हुआ इन्द्रिय का प्रभाव रहता है। **शब्द अन्तरिक्ष से गुथा हुआ रहता है,** प्रत्येक इन्द्रिय अपनी-अपनी धारा में पिरोई हुई है। **श्रोत्रों का देवता दिशा कहलाती हैं,** नेत्रों का देवता सूर्य कहलाता है, और **प्राण का देवता वायु कहलाता है, गुरुत्त्व का देवता पृथ्वी कहलाती है।** परन्तु अपनी-अपनी देवत्व को प्राप्त हो

करके इनका कोई सूत्र भी तो होगा। जो आत्म सूत्र है, सूत्र में पिरोये हुए हैं जब आत्म-तत्त्व इस मानव शरीर से निकल जाता है तो अग्नि उससे पृथक् हो जाती है शरीर से दिशाएँ नहीं रहतीं, नेत्रों में ज्योति चली गई, सूर्य नहीं रहा। वह आत्मा ही सूत्र बना हुआ था इन सभी का, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों का सूत्र बना हुआ था।

एक समय मुझे स्मरण है महर्षि उद्दालक गोत्र में समर्पणानन्द ऋषि हुए हैं। जब समर्पेतु ऋषि एक समय अनुसन्धान कर रहे थे, वह अनुसन्धान करते हुए अपनी विज्ञानशाला में तारा मण्डलों की गणना कर रहे थे। एक निहारिका उन्हें दृष्टिपात आने लगी। उस निहारिका के मण्डलों को दृष्टिपात करने लगे तो जब वह मण्डलों में रमण करने लगे तो मण्डलों में रमण करते-करते आकाश में गङ्गा के नाना मण्डलों की गणना करते-करते उनका प्राणान्त हो गया। आत्मा शरीर से निकल गया तो वह गणना अधूरेपन में चली गई। अरे! वह सूत्र कहाँ चला गया, जिस सूत्र से वह गणना कर रहे थे, जिस आशा से वह गणना कर रहे थे, वह सूत्र कहाँ चला गया। वह सूत्र तो आत्मा था, वह सूत्र तो आत्मा था शरीर से कहाँ चला गया? जिससे वह ज्ञान में ला रहा था यह जो शरीर है यह तो जड़वत् रह गया। इसमें तो वह सत्ता नहीं है जिससे लोकों की गणना हो रही थी। वह सत्ता समाप्त हो गई है। तो उस आभा में रमण करने वाला मानव अपने में सूत्रित बन करके, वह आत्मा केवल्य बन करके, चित्त के मण्डल सूत्र को ले करके जन्म-जन्मान्तरों का प्रतीक बन गया था। तो यह कैसी विचित्र आभा है। वह उसी में शान्त हो गया।

यह कोई न कोई सूत्र ऐसा है जो मुनिवरो! देखो इसमें पिरोया हुआ है। एक महर्षि कुक्कुट मुनि महाराज के महापिता थे जिनका नाम सैनकेतु ऋषि महाराज था। सैनकेतु ऋषि महाराज एक समय चित्त के ऊपर अध्ययन कर रहे थे—यह चित्त क्या है? जिसमें जन्म-जन्मान्तरों के

संस्कार विद्यमान रहते हैं। वह पिचासी वर्ष के लिए मौन हो गए और मौन हो करके वह चित्त के मण्डल को जान गए कि **चित्त कहते हैं जिनमें संस्कार विद्यमान होते हैं और संस्कारों से जब विहीन मानव का चित्त मण्डल बन जाता है तो उस समय मोक्ष प्राप्त होता है।** यदि मानव चित्त में कोई संस्कार ही नहीं रहेंगे, केवल्य बन जाएगा, चित्त का मण्डल ही समाप्त हो गया है, तो चित्त के मण्डल के समाप्त होने पर आत्मा मोक्ष के द्वार पर चला गया, परमात्मा की आभा में परणित हो गया है। जैसे अग्नि यज्ञशाला में प्रकाशित हो रही है। अग्नि यज्ञशाला में ऊर्ध्वामुख को ले करके विचार आता है कि अग्नि का ऊर्ध्वामुख क्यों है? यह सप्त जिह्वा वाली अग्नि इसका ऊर्ध्वामुख इसलिए है क्योंकि उसका सखा ऊर्ध्वा में विद्यमान रहता है। ऊर्ध्वा में कौन है? देखो प्रकाश है, वह द्यौ कहलाता है, वह सूर्य है, सूर्य की किरण उस अग्नि को अपने में धारण कर लेती है। उसका द्यौमयी मूर्ध्वा कहलाता है। तो मुनिवरो! देखो इसलिए **आत्मा अपने आनन्द के लिए वह चित्त के मण्डल को जानना चाहता है।** प्रत्येक मानव जाति चित्त के मण्डल में प्रवेश करता है तो अपने में मौन हो जाता है। विचार-विनिमय क्या? मुनिवरो! देखो ऋषि यह चिन्तन करता हुआ मोक्ष को प्राप्त हो गया।

सङ्गतिकरण

मैं तुम्हें विचार गम्भीर देना नहीं चाहता हूँ। केवल विचार-विनिमय यह चल रहा था कि महर्षि विश्वेसर्वा और महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज दोनों का सम्वाद चल रहा था। वह आपोमयी ज्योति में संसार की और आभा की दृष्टि में अपने को दृष्टिपात करना चाहते थे। उनके मनों की यह कामना थी कि आपोमयी ज्योति है यह प्राण का सूत्र कहलाता है। प्राण सूत्र में पिरोया हुआ यह आपो ज्योति कहलाता है, जिसके ऊपर इसको पान करने से मानव शान्ति को प्राप्त होता है। सङ्गतिकरण करने वाले गृह का निर्माण करते हैं, इन्हीं का सङ्गतिकरण करते हुए याज्ञिक यज्ञ

करते हैं, सङ्गतिकरण को करने वाले इन्द्रियों का विशेष साकल्य बना करके हृदयरूपी यज्ञशाला में जब याग करते हैं तो वह योगी बन जाते हैं। वह सङ्गतिकरण हो रहा है, आपोमयी ज्योति का सङ्गतिकरण है। प्रातःकालीन पति-पत्नी अपने आसन से पृथक् होते हैं परन्तु वह ब्रह्मयज्ञ करते हैं, ब्रह्म का चिन्तन करते हैं, ब्रह्म की सृष्टि को निहारते रहते हैं। ब्रह्म क्या है? ब्रह्म की आभा क्या है? तो मुनिवरो! ब्रह्म को निहारते-निहारते वह ब्रह्म-याग करते हैं। ब्रह्म-याग करते-करते अपने को ब्रह्म में, ब्रह्म को अपने में जब दृष्टिपात करने लगते हैं कि ब्रह्म तो हममें विद्यमान है और हम ब्रह्म में विद्यमान हैं। या हम माता वसुन्धरा की गोद में हैं और वसुन्धरा से वसुन्धरा के द्वारा वसुन्धरा की आभा में हम निहित हो रहे हैं। तो उस समय उसका ब्रह्म-याग भी सिद्ध हो जाता है और वह एक-दूसरे विचारों में सङ्गतिकरण हो रहा है। महर्षि विश्वेसर्वा ने कहा कि प्रभु मैं 'यागं ब्रह्मवाचा देवाः यागां ब्रह्मलोकाम् ब्रहस्तु व्यापं ब्रह्मलोकाम् बर्तोतिऽस्तो हो ब्रह्म-यागाऽहम्' नाना प्रकार के याग-ब्रह्म-याग करते हैं, हम देवयाग करते हैं, अग्नि के मुख में साकल्य प्रदान करते रहते हैं, वही अग्नि सूक्ष्म बना करके हमें वृष्टि के रूप में परणित कर देती है। उसको हम जान करके अपने में अध्यात्मिक यज्ञ में परणित हो जाएँ।

विचार-विनिमय क्या है? आज मैं तुम्हें बिखरे हुए विचारों को, बिखरे हुए पुष्पों को एकत्रित करता हुआ एक माला के सूत्र में तुम्हें पुष्पों को पिरोना चाहता हूँ और वह पिरोना क्या है? आज मैं 'ब्रह्मबर्चोसि ब्रह्मावाचा' अपने में महान् बनने के लिए, परमात्मा को अपना वरणीय बनाने के लिए हम सदैव तत्पर हो जाएँ, क्योंकि वह हमारा वरणीय देव है, वह शिव कहलाता है। वह न्यायकर्त्ता है, वह ब्रह्म कहलाता है, उत्पत्ति का मूलक कहलाता है, वह शोधन करने वाला विष्णु कहलाता है, क्योंकि वह पालन करता है। ब्रह्मा उत्पत्ति में तमोगुण, रजोगुण में शिव है और सतोगुण में देखो विष्णु माना गया है। जब मैं माता के द्वार पर जाता हूँ तो माता में तीनों गुण सामान्यताएँ हैं।

सतोगुण में वह बालक का पालन कर रही है। तमोगुण में उत्पत्ति का मूलक बनी हुई है रजोगुण में शासन कर रही है। मेरे पुत्रो! पालन भी, शासन भी और वह उत्पत्ति का मूलक 'न्याप्रवर्तो देवाः' तीनों गुण उसमें दृष्टिपात आ रहे हैं। हे माता तू पालन करने वाली विष्णु है। परमात्मा का नाम भी विष्णु है क्योंकि वह पालन करने वाला है। ध्रुवा में रहने वाला है क्योंकि वह पालन करने वाला सतमयी कहलाता है। सतोगुण में पालन है, रजोगुण में शासन है और तमोगुण में मेरे पुत्रो! देखो उत्पत्ति के मूल बने हुए हैं। विचार-विनिमय क्या? एक-दूसरे में सत्य की प्रतिभा दृष्टिपात आ रही है। यह कैसी विचित्रता है प्रभु की। रजोगुण में भी सत्यता और और तमोगुण में भी सत्यता है क्योंकि सत्यता के आधार पर तीनों गुण अपनी-अपनी आभा में गति कर रहे हैं।

वाह रे मेरे प्यारे प्रभु! तू कितना विज्ञानमयी है? तू एक वस्तु में एक-दूसरे के मूल को नष्ट करना नहीं चाहता। अपने-अपने गुण अपनी-अपनी प्रतिभा रत्त हो रहे हैं। मैं कोई विशेष चर्चा तुम्हें देने नहीं आया हूँ, मैं व्याख्याता नहीं हूँ, केवल तुम्हें यह परिचय देने के लिए आया हूँ कि आपोमयी ज्योति के ऊपर हमें विचार-विनिमय करना चाहिए। **प्रत्येक मानव को आपोमयी ज्योति का अध्ययन करना चाहिए।** क्योंकि आपोमयी ज्योति हमारा आसन बना हुआ है, वह हमारा ओढ़न है, वही हमारे पाँसे बने हुए हैं। उसी से हमारा उत्पत्ति का मूल कारण बना हुआ है। तो हम शिशु आपो में रमण करने वाले हैं, आपो में ही रत्त रहने वाला है।

महर्षि विश्वेसर्वा ने विभाण्डक मुनि महाराज से कहा कि प्रभु मैं जल को, आपो को प्रोक्षण कर रहा हूँ, मैं दृष्टिपात करना चाहता हूँ कि मेरा मोक्ष कैसे हो, मैं मोक्ष के द्वार पर जाना चाहता हूँ। परन्तु इतना मेरे द्वारा यह द्रव्य है मैं सर्वत्र द्रव्य को याग में परणित करना चाहता हूँ। क्योंकि याग से ही मानव का कल्याण होता है। जितना संसार में शुभ

कर्म है, जितना भी आत्मीय कर्म है, उस सर्वत्र का नाम देखो याग माना गया है। एक वह देखो याग के रूप में बन जाते हैं, एक भौतिक याग बन जाता है, एक आध्यात्मिक याग बन जाता है। मानव इन्द्रियों का साकल्य एकत्रित करके उसको हम आन्तरिक जगत में हृदयरूपी यज्ञशाला में आहुति देते हैं, तो आध्यात्मिक याग बन गया है। उसको बाह्य अग्नि में प्रवेश करते हैं साकल्य को, नाना प्रकार के द्रव्य को वह भौतिक याग बन करके द्रव्य का शोधन कर देता है। गृह के परमाणुवाद का शोधन कर देता है, वायुमण्डल को पवित्र बना देता है।

राजा अश्वमेध यज्ञ करता है, तो राजा के राष्ट्र को पवित्र बना देता है। राज्य में रहने वाली प्रजा एक महान् कर्म और क्रियाकलाप में परणित हो जाती है तो हम इन्द्रियों के साकल्य को अन्तरात्मा में हुत करने लगते हैं, प्रहुत करने लगते हैं तो आध्यात्मिक याग हो करके हम आत्मा के उस अन्धकार को अपने से दूरी कर देते हैं, क्योंकि प्रभु के राष्ट्र में रात्रि नहीं होती। जब प्रभु के राष्ट्र में रात्रि नहीं होती, तो वहाँ अन्धकार भी नहीं होता। जहाँ अन्धकार नहीं होता, वहाँ आलस्य और प्रमाद भी नहीं होता। जहाँ आलस्य और प्रमाद नहीं होता वहाँ अन्धकार नहीं होता, जहाँ अन्धकार नहीं होता वहाँ सदैव प्रकाश रहता है। वह प्रभु का राष्ट्र कहलाता है।

आज का हमारा वाक्य यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए परमपिता परमात्मा की महती को जान करके उसे अपना वरणीय बना करके हम इस संसार सागर से पार होना चाहते हैं। अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। **आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय यह है** कि हमारे ऋषि मुनि परम्परागतों से अनुसन्धान करते रहे हैं। कहीं आपो के ऊपर, कहीं अग्नि के ऊपर, कहीं ज्योतिमयी दृष्टिपात करने वाले सूत्र के ऊपर चिन्तन होता रहा है। वह ओ३म्

रूपी सूत्र है कहीं वेद की ऋचाओं के ऊपर अनुसन्धान होता रहा है, वेद में जितना ज्ञान है, विज्ञान है वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरो दिया है। वहीं-वहीं सूत्र में देखो आपोमयी ज्योति पिरो दी है उसमें ज्योति का प्रादुर्भाव होता है, ज्योतिमयी दृष्टिपात करने वाला कहीं माता के गर्भ को उस सूत्र से पिरो दिया है। उस मानव शिशु से पिरो करके उस शिशु को देवताओं से पिरो दिया और देवता उस सूत्र में पिरोने से वह ओ३म् रूपी सूत्र में सर्वत्र पिरोया हुआ है।

गम्भीर अध्ययन की प्रेरणा

मुनिवरो! देखो प्रभु की कैसी विचित्रता है जिसके ऊपर हमें बहुत गम्भीरता से इन अन्तस्थलियों पर विद्यमान हो करके, हमें अध्ययन करना है। **अध्ययन करना ही हमारा मौलिक कर्त्तव्य है, क्योंकि बिना अध्ययन के मानव अपना स्वतः अध्ययन नहीं कर सकता।** जब मानव अपना स्वतः अध्ययन कर लेता है कि मैं क्या हूँ, मैं कहाँ से आया हूँ, कौन हूँ परन्तु मेरा निर्माण कैसे हुआ है, कौन निर्माण देता है, आत्मा क्या है, प्राण सूत्र क्या है, जब तक इसका स्वतः अध्ययन नहीं होता, तब तक मानव अपने में महान् नहीं बनता।

आज का हमारा यह वाक्य क्या कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए, उसको अपना वरणीय बना करके उसी सूत्र में हम अपने को पिरोया हुआ स्वीकार करें। यह आज का वाक्य अब हमारा समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

वेद पाठ .....

महर्षि महानन्द जी—अच्छा भगवन्! आज्ञा।
पूज्यपाद गुरुदेव—ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

दिनाँक : 12 नवम्बर, 1983
समय : सायँ 6:00 बजे
स्थान : सेठ ओङ्कारनाथ, मोदीनगर, मेरठ

।। ओ३म् ।।

याग और राष्ट्र

जीते रहो!

मैं भी आधुनिक काल के राष्ट्र से यही कहता हूँ हे राजन्! तेरे राष्ट्र में प्रत्येक गृह में वेद ध्वनि और सुगन्धि होनी चाहिए। जब वेद ध्वनि वह विचारों में परिवर्तित होती है तो राजा का राष्ट्र पवित्र बन जाता है। अश्वमेध याग करने वाला राजा हो। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अश्वमेध यज्ञ की विवेचना करते हुए, उनकी विवेचना कितनी मार्मिक और देखो दर्शनों से गुथी हुई है। परन्तु आधुनिक, मध्य काल में महाभारत के काल के पश्चात् अश्वमेध यागों का जो परिवर्तित हुआ, देखो उसमें अश्व नाम राजा का भी है, अश्व नाम घोड़े का भी है तो अश्व की मांस की आहुति देना प्रारम्भ कर दिया। यहाँ अज्ञान कितना आया कि महापुरुषों ने उसको तिलाञ्जली दी और याग का तिरस्कार हुआ। उसका परिणाम यह हो रहा है कि आज देखो यह समाज है, आज का जो राष्ट्रवाद है हिंसा की वेदी पर निहित हो रहा है। मैं विशेषता में नहीं जाना चाहता हूँ। बहुत पुरातन काल हुआ मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा था कि यदि समाज को ऊँचा बनाना है, मनु राष्ट्र की स्थापना करनी है तो यहाँ मछली से ले करके प्राणी मात्र की रक्षा करनी होगी। तो इस प्रकार का मेरा सदैव एक विचार रहता है। आज यह जो युग चल रहा है यह युग बड़ा अव्रत व्रहे है। यह युग ऐसा है इस युग में देखो प्रत्येक मांस की आहुति अपने उदर में दे रहा है, देना चाहता है। परन्तु हे मानव! तू अभागा क्यों बन रहा है, तू परमात्मा की सृष्टि में आया है, तू वहाँ ऊर्ध्वा में क्रियाकलाप कर जिससे तेरा जीवन ऊँचा बनता चला जाए और राष्ट्रीयता को ऊँचा बना और राष्ट्रीयता में रूढ़ि नहीं, धर्म होना चाहिए, रूढ़ि नहीं होनी चाहिए।

आज मेरा जो विचार रहता है वह यजमान के साथ रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे क्योंकि ऐसे युग में तू

अपने में, अपने द्रव्य को सदुपयोग का अग्रह बना रहा है, सदुपयोग हो रहा है तेरे द्रव्य का। आधुनिक काल का विज्ञान तो इस वायुमण्डल में दूषितपने की भी घोषणा करता रहता है और यह घोषणा करता है मेरा यह वायुमण्डल अपवित्र बन गया है। हे मानव! तू याज्ञिक बन। हे वैज्ञानिकों! राजा से कहो कि याग करे और विशाल-विशाल याग हों, अहिसा से देखो 'अहिसा परमोधर्मी' याग होने चाहिएँ उनमें विचार बनेगा, चरित्र बनेगा, सम्प्रदायों का विनाश हो जाएगा। धर्म की स्थापना करता हुआ वेद का प्रसार होगा। वेदों प्रकाशाम् दिव्यं ब्रह्मा वाहो अश्वतम् देवाः वेद का मन्त्र यह कहता है हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। आज उस यजमान का सौभाग्य स्वीकार कर रहा हूँ जो अपने द्रव्य का सदुपयोग कर रहा है। द्रव्य का सदुपयोग होना बहुत अनिवार्य है। जब राजा के राष्ट्र में या समाज में या गृह में देखो द्रव्य का सदुपयोग होने लगता है, तो राष्ट्र पवित्र बन जाता है, समाज पवित्र बन जाता है, गृह पवित्र बन जाता है। तो इसलिए द्रव्य का सदुपयोग करना है तो देवपूजा की जाए। देवपूजा का अभिप्राय यह है कि देवताओं की पूजा होनी चाहिए। देवताओं की पूजा का अभिप्राय यह है कि उनका सदुपयोग करना है, **सदुपयोग करने का नाम ही पूजा कहलाती है,** जैसे यागाम् ब्रह्मः साकल्य याग में प्रदान किया जाता है। वह साकल्य वायुमण्डल में प्रसारित हो जाता है, उसी को ले करके मेघ मण्डलों की उत्पत्ति होती है। समय-समय पर वृष्टियाँ होती हैं, वह देवपूजा है उसमें अग्नि का पूजन है; अग्नि तो देवताओं का मुख कहलाता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में कहा है कि अग्नि तो परमाणुओं का भेदन कर देती है और वह भेदन करके जो वायुमण्डल में अपनी ध्वनित होता है तो मुनिवरो! ऐसा मुझे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया कि अशुद्ध परमाणुओं को निगलता हुआ, शुद्धीकरण करता हुआ, वायुमण्डल को पवित्र बनाती है। इस प्रकार यागाम् ब्रह्म लोकाम् **यही याग है जो मानव को ब्रह्म लोक में पहुँचा देता है।**

पूज्यपाद-गुरुदेव

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. आत्मिक बल को प्रबल बनाने के लिए हमें परमात्मा की याचना करना अनिवार्य है।
2. संसार में वास्तविकता लानी है तो हमें एक-दूसरे में प्रीति करनी चाहिए।
3. निद्रा अवस्था में आत्मा-परमात्मा से मिलान करता है।
4. चित्त की एकाग्रता करना ही एक अनुपम योग है।
5. ऊँचे पुरुष होते हैं वह इस संसार में वायु रूपी विचारों से विचलित नहीं होते।
6. जब तक हम अपने आहार व्यवहार को नहीं विचारेंगे मानव की आत्मा में शान्ति प्राप्त नहीं होगी।
7. वेद प्रकाश ऐसा हे जो मानव के अन्धकार को नष्ट करता है।
8. वह मनुष्य संसार में पाप नहीं करता जो परमात्मा को सर्वव्यापक माना करता है।
9. देवता वह होते हैं जो दूसरो की रक्षा करते हैं।
10. दैत्य वह मनुष्य कहलाता है जो दूसरे जीवों का भक्षण कर जाते हैं।
11. संसार में वह मनुष्य ऊँचा कहलाता है जो दूसरों का गुणग्राही बनता है।
12. मानव का भूषण पवित्र ज्ञान है।
13. आज हमें ऋषि-मुनियों की परम्परा को जानना है।
14. अहिल्या पृथ्वी को भी कहते हैं।
15. वह राजा ऋणी नहीं होता जो राजा देवताओं के ऋण से उऋण होता है।
16. हमें अपने उदर की पूर्ति करते हुए वह कर्म करने चाहिएँ जो कर्म हमारे साथ जाने वाले हों।

यौगिक प्रवचन के स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (नियम नं. 8)

1.	प्रकाशन स्थान	: दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	मुद्रक का पता	: ए-59, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
4.	प्रकाशक	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	प्रकाशक का पता	: ए-59, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
5.	सम्पादक का नाम	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	सम्पादक का पता	: ए-59, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	: वैदिक अनुसंधान समिति (पञ्जी.)

मैं डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश

प्रकाशक के हस्ताक्षर

वैदिक अनुसंधान समिति (पञ्जी.)

सी-38, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017

॥ ओ३म् ॥

सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव **ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी** महाराज की पावमानी प्रेरणा से उनकी जन्म-स्थली पर सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन समस्त ग्राम वासियों द्वारा ग्राम खुर्रमपुर सलेमाबाद, गाजियाबाद में **दिनाँक 22 मार्च 2019** से **24 मार्च 2019** तक अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है। जिसमें आप सभी याज्ञिक प्रेमी अपने परिवार, इष्ट मित्रों व सम्बन्धियों सहित सादर आमन्त्रित हैं। यज्ञ की ज्योति को बल प्रदान करने के लिए आपकी आहुति द्वारा यज्ञ का समापन होना अपेक्षनीय है।

आयोजक व निवेदक : आप और हम।

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) **PAN No. – AAAAV7866J**

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

website : www.shringirishi.in

Email : contact@shringirishi.in

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	110.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	110.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	30.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	45.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, ए-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली	101 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू सुपुत्र श्री सोमदत्त त्यागी, तलहटा	100 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर उर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के ऋणों की चर्चा आती है। आज मैं उन ऋणों की चर्चा में जाना नहीं चाहता हूँ, केवल अपने प्यारे प्रभु का गुण-गान गाते हम अपना अध्ययन प्रारम्भ कर देते हैं। प्रायः सभी मानवों का यह कर्त्तव्य हो जाता है—**प्रातःकाल की अमृतमयी वेला में जागरुक हो जाने के पश्चात् प्रभु का चिन्तन करना, उसकी महिमा को विचारना मानव का एक महान कर्तव्य हो जाता है।** आज कोई मानव यह कह रहा है कि मैं किसी प्राणी के लिए यह कार्य कर रहा हूँ या चेतना के लिए ईश्वर तत्व के लिए परन्तु यह नहीं माना जाता। **सँसार में जो भी कर्म करता है वह मानव स्वयं अपने ही लिए करता है। अपनेपन में ही उसे प्रसिद्धि प्राप्त होती है।** अपनेपन में ही उसे नाना प्रकार से उसका आत्म हृदय उसको धिक्कारने लगता है परन्तु जिसका अन्तरात्मा धिक्कारता है उस मानव को ही सँसार में जीने का अधिकार प्राप्त नहीं होना चाहिए। क्योंकि जीवन उन प्राणियों को सदैव प्राप्त होना चाहिए जिनको अपनी आत्मा पर, स्वयँ की प्रवृत्तियों पर विश्वास और श्रद्धा नहीं होती उस मानव का अन्तरात्मा उसको धिक्कारता रहता है परन्तु वह सदैव अपने प्रकृति के आवेशों में आ करके अपनी प्रतिभा को ऐसे प्राप्त कर देता है जैसे सायँकाल के सूर्य की किरणें अस्त हो जाती हैं। मानव का सँसार में एक ही कर्तव्य रहता है कि दुर्गुणों को त्यागना और शुभ कर्मों को अपनाना। यह मानव का विचित्र कर्तव्य होता है। जिनके ऊपर मानव को अध्ययन करना है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 47 : अंक : 558
मार्च 2019

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-03-2019
Published on 5th day of the same month